परागा 4

पाठ 1. इनसे सीखें

पाठ का परिचय

यह कविता प्रकृति के प्रेरणाप्रद रूप की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। कवि के अनुसार फूलों की तरह काँटों जैसी मुश्किलों के साथ मुसकुराकर जीने वाले लोग सदा जग में आदर पाते हैं। जो लोग दीपक की तरह तिल-तिल जलकर दूसरों के लिए सुख एवं ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं, उनका नाम इतिहास में सदा के लिए अमर हो जाता है। तट से टकराती हुई लहर हमें गतिशील रहने तथा आगे बढ़ते जाने का संदेश देती है। आगे बढ़ते रहने से ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार वृक्षों का जीवन भी हमें दूसरों के हित के लिए जीने और कर्म करने का संदेश देता है। प्रकृति के ये प्राणहीन उपादान हमें जीवन को मुसकुराकर दूसरों के लिए जीने की प्रेरणा देते हैं। ये हमें हँसना-हँसाना, औरों के लिए जीना-मरना और अपना जीवन सफल बनाना सिखाते हैं।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

परोपकार मनुष्यता की पहचान है। अपने लिए तो पशु भी जीते हैं। मनुष्य उनसे भिन्न इसीलिए हैं, क्योंकि वे परोपकार कर सकते हैं, दूसरों को समझ सकते हैं और उनकी सहायता कर सकते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका स्वयं आदर्श रूप में कविता-पाठ करें। बच्चों को कविता सुनाने के लिए ऑडियो, सी.डी. या टेपरिकॉर्डर का उपयोग भी किया जा सकता है। कविता की एक-एक पंक्ति बोलते हुए बच्चों को दोहराने के लिए कहें। प्रत्येक बच्चे से कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़वाएँ। कविता से जुड़े कुछ प्रश्न भी पूछें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूछते हुए बच्चों से चर्चा करें –

- उन्हें प्रकृति में कौन-कौन सी चीज़ें अच्छी लगती हैं?
- फूलों और काँटों को देखकर मन में कौन-से भाव उठते हैं?
- हम किस प्रकार अपना जीवन सार्थक बना सकते हैं?